डाईया गॉव के सफल बकरी पालक फूस सिंह केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, मथुरा द्वारा पुरस्कृत

बीकानेर जिले के डाईया गॉव के रहने वाले प्रगतिशील व सफल बकरी पालक फूससिंह (55) करीब 30 वर्षो से बकरी, भेड़ पालन व कृषि के कार्य कर रहे हैं पहले वह घर की आवश्यकतानुसार 10 –15 बकरी रखते थे और अपनी 50 बीघा असिंचित (बीरानी) भूमि पर कृषि करते थे। कृषि वर्षा पर ही निर्भर थी जिससे अधिक पैदावार नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर थी लेकिन 6 वर्ष पहले उन्होंने वेटेनरी विश्वविद्यालय की बकरी परियोजना से प्रभावित होकर बकरी पालन को ही अपना व्यवसाय बनाने की ठान ली। शुरू में उन्होंने 20 मारवाड़ी नस्ल की बकरी रखी और बकरी परियोजना के रजिस्टर्ड मेम्बर बने और समय समय पर परियोजनाओं से जानकारी लेकर आज एक सफल बकरी पालक है और गांव के पशु पालकों के लिये प्रेरणा स्त्रोत है। आज उनके पास लगभग 105 मारवाड़ी नस्ल की बकरिया है और तीन बकरी परियोजना के तहत मारवाड़ी नस्ल के बकरे दे रखे है।

105 बकरियों में से 23 प्रतिशत वो बकरियां है तो दो या तीन बच्चे एक साथ देती हैं। आज वो 50 बीघा जमीन बकरी पालन के लिए रख रखी है। वहां वो बीजाई नहीं करते (खोड़) व उसे बकरिया चराने के लिये रखते है। क्योंकि राजस्थान में बारीश कम होती हैं। बकरियों का पसंदिता भोजन खेजड़ी के पत्ते (पनडी) व बेर का पेड़ (बोरटी) हैं इसलिए उन्होंने लगभग 60 खेजड़ी व 100 –155 बेर के पेड़ लगा रखे है। इन पौधों को कम पानी की आवश्यकता होती है। और आसानी से लगाये जा सकते है। फूससिह साल मे एक बार उनकी कटींग करते है (छांगते हैं) जिससे उपलब्ध बकरियों का साल भर के भोजन के लिए प्राप्त होता हैं। उन्होंने बकरियों को गर्मी व सर्दी से बचाने के लिये शेड़ लगा रखे है, शुद्ध पानी के लिये खाली बना रखी हैं। वो समय समय पर कृमीनाशी दवा व टीकाकरण करवाते रहते है जिससे बकरियां स्वस्थ रहती है। और साल में एक बार लगभग 80 से 90 तक बकरियां बेचते हैं व दुध बेचकर दोनों आमदनी से लगभग 3 से 4 लाख रूपयें कमाते है। फूससिंह ने बकरी के बालो को कातकर चारपाईयां भी बना रखी हैं। आज उनका परिवार सम्पन व खुशाल है। 10 सितम्बर 2015 को कृषि नवोन्मेष दिवस पर फूससिंह जी को सफलता की कहानी के लिए केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, मथुरा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

मारवाड़ी फील्ड यूनिट, बीकानेर